दैनिक भास्कर

खबरों की तेजी से ज्यादा जरूरी है विश्वसनीयता

एमआईटी-डब्ल्यूपीयू के मीडिया सम्मेलन में पत्रकारिता की चुनौतियों पर मंथन

भास्कर न्यूज | पुणे

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के बीच पत्रकारिता के सामने सबसे बड़ी चुनौती खबरों की विश्वसनीयता बनाए रखना है। आज समाचारों की दिशा तय करने में एल्गोरिदम की भूमिका बढ़ रही है। ऐसे में खबरों को सबसे पहले प्रकाशित करने की होड़ के बजाय उनकी सच्चाई की पुष्टि करना ज्यादा महत्वपूर्ण है। पत्रकारिता का उद्देश्य केवल लोगों का ध्यान आकर्षित करना नहीं, बल्कि उन्हें सही और उपयोगी जानकारी देना होना चाहिए।

ये विचार कोथरूड स्थित एमआईटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी में आयोजित आठवें राष्ट्रीय मीडिया और पत्रकारिता सम्मेलन में विशेषज्ञों ने व्यक्त किए। यूनिवर्सिटी के मीडिया एवं संचार विभाग की ओर से 30 और 31 अक्टूबर को संवाद, समावेशिता और शांति विषय पर दो दिनी सम्मेलन आयोजित किया गया। उसमें वरिष्ठ पत्रकारों, संपादकों, फिल्म निर्माताओं, कानूनी विशेषज्ञों और विज्ञापन क्षेत्र से जुड़े लोगों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन में एआई, फर्जी खबरों, डीपफेक, एल्गोरिदम और मीडिया की सामाजिक जिम्मेदारी जैसे विषयों पर चर्चा हुई।

उद्घाटन सत्र में वरिष्ठ पत्रकार और डॉक्यूमेंट्री निर्माता रमेश मेनन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने अटेंशन एज : मीडिया, एल्गोरिदम और विश्वास की लड़ाई विषय पर विचार रखे। वे बोले कि आज मीडिया में एल्गोरिदम की भूमिका लगातार बढ़ रही है। एल्गोरिदम यह नहीं देखता कि खबर सच है या समाज के लिए महत्वपूर्ण है। उसका उद्देश्य केवल यह होता है कि पाठक कितनी देर तक कंटेंट से जुड़ा रहता है। ऐसे में पत्रकारों के लिए निष्पक्षता और सत्यता बनाए रखना बड़ी चुनौती है।



मानवीय निर्णय की जगह नहीं ले सकती एआई

द हिंदू के हैदराबाद संस्करण के रेजिडेंट एडिटर रवि रेड्डी ने कहा कि एआई से तैयार होने वाली खबरों और डीपफेक के दौर में खबरों की गति से ज्यादा उनकी पुष्टि जरूरी है। एआई न्यूज रूम के काम में मदद कर सकती है, लेकिन मानवीय निर्णय की जगह नहीं ले सकती। एल्गोरिदम लोगों की सहभागिता मापते हैं, जबकि पत्रकारिता का काम समाज के हित को प्राथमिकता देना है। डॉ. मीना शर्मा ने कहा कि मीडिया के सामने आज विश्वसनीयता का बड़ा संकट है। उससे निपटने के लिए गुणवत्तापूर्ण और जनहित से जुड़ी खबरों पर ध्यान देना होगा। मीडिया के विद्यार्थियों को ऐसी कहानियां सामने लाने के लिए प्रयास करना चाहिए, जिन्हें मुख्यधारा के मीडिया के साथ सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भी लोगों तक पहुंचाया जा सके। सम्मेलन के दौरान चार पैनल चर्चाएं आयोजित की गईं। इनमें पत्रकारिता में बदलाव, फिल्म निर्माण में एआई, लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका और विज्ञापन एवं जनसंपर्क के क्षेत्र में एआई के उपयोग पर चर्चा हुई।

Dainik Jagran

8वें राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन में सत्य और जवाबदेही का आह्वान



भोपाल। समाचारों की खपत पर एल्गोरिदम का बढ़ता प्रभाव, फर्जी खबरों के खतरे और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस दौर में जनविश्वास बनाए रखने की चुनौती, एमआईटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी के 8वें राष्ट्रीय मीडिया और पत्रकारिता सम्मेलन के मुख्य विषय रहे। मीडिया एवं संचार विभाग द्वारा संवाद, समावेशिता और शांति विषय पर आयोजित इस दो दिवसीय सम्मेलन में बदलती सूचना प्रणाली में मीडिया की जिम्मेदारियों पर मंथन करने के लिए वरिष्ठ संपादक, पत्रकार, फिल्म निर्माता, कानूनी व नीति विशेषज्ञ और विज्ञापन क्षेत्र के दिग्गज एकत्र

लोकमत

'एआय'च्या युगात जनविश्वास टिकवून ठेवणे मोठे आव्हान'

लोकमत न्यूज नेटवर्क

पुणे : अल्गोरिदमचा वाढता प्रभाव, बनावट माहितीचे वाढते धोके आणि कृत्रिम बुद्धिमत्तेच्या युगात जनविश्वास टिकवून ठेवण्याचे आव्हान माध्यमांसमोर आहे, असा सूर परिसंवादातून उमटला. एमआयटी वर्ल्ड पीस युनिव्हर्सिटीच्या आठव्या राष्ट्रीय माध्यम व पत्रकारिता परिषदेत माध्यम आणि संवादशास्त्र विभागाद्वारे 'संवाद, समावेशकता आणि शांतता' या संकल्पनेवर दोन दिवसीय चर्चा करण्यात आली. यात ज्येष्ठ संपादक, पत्रकार, चित्रपट निर्माते, कायदे व धोरण तज्ज्ञ आणि जाहिरात क्षेत्रातील

महाराष्ट्र टाइम्स

जनविश्वास टिकवणे हेच पत्रकारितेचे ध्येय

ज्येष्ठ पत्रकार रमेश मेनन यांचे मत

पुणे : 'अल्गोरिदम संपादकाची भूमिका बजावत असून, त्याला माहिती खरी आहे का किंवा महत्त्वाची आहे का, यापेक्षा वाचकांना अधिकाधिक वेळ गुंतवून ठेवण्यात रस असतो. मात्र, पत्रकारितेचे ध्येय वाचकांचे लक्ष वेधणे नसून, जनविश्वास टिकवणे हे आहे,' असे परखड मत ज्येष्ठ पत्रकार आणि माहितीपट निर्माते रमेश मेनन यांनी व्यक्त केले.

एमआयटी वर्ल्ड पीस युनिव्हर्सिटीच्या (एमआयटी-डब्ल्यूपीयू) आठव्या राष्ट्रीय माध्यम व पत्रकारिता परिषदेत ते बोलत होते. 'अटेंशन एज : मीडिया, अल्गोरिदम आणि विश्वासाची लढाई' या विषयावर त्यांनी माध्यमविश्वातील बदलांचा वेध घेतला. समाजमाध्यमांवरील अल्गोरिदमचा वाढता प्रभाव आणि कमी होत चाललेला वाचकांचा लक्ष देण्याचा कालावधी यामुळे बातम्यांच्या सादरीकरणाचे स्वरूप बदलत आहे. अशा परिस्थितीत पत्रकारितेने सत्य पडताळणी आणि विश्वासार्हतेला प्राधान्य देणे आवश्यक असल्याचे मेनन यांनी सांगितले.

'संवाद, समावेशकता आणि शांतता' या संकल्पनेवर आयोजित दोन दिवसीय परिषदेत कृत्रिम बुद्धिमत्तेचा (एआय) पत्रकारितेवरील प्रभाव, बनावट माहिती, डीपफेक आणि माध्यमांची सामाजिक जबाबदारी या विषयांवर ज्येष्ठ संपादक, पत्रकार, चित्रपट निर्माते आणि धोरणतज्ज्ञांनी चर्चा केली. ज्येष्ठ पत्रकार रवी रेड्डी, डॉ. मीना शर्मा, कुलगुरू डॉ. रविराजा सीताराम, ए.एस.जी.के. तेजा उपस्थित होते.

'माहितीची सत्यता महत्त्वाची'

रेड्डी यांनी एआयच्या युगात वेगापेक्षा माहितीची सत्यता पडताळणे अधिक महत्त्वाचे असल्याचे सांगितले. एआय पत्रकारितेला मदत करू शकते; मात्र मानवी बुद्धिमत्ता आणि निर्णयक्षमतेची जागा घेऊ शकत नाही. अल्गोरिदम वाचकांचा सहभाग मोजतात, तर पत्रकारिता सार्वजनिक मूल्य जपते, असे रेड्डी यांनी नमूद केले. डॉ. शर्मा म्हणाल्या की, 'दर्जेदार आणि प्रभावी कथा मांडण्यासाठी विद्यार्थ्यांनी पुढाकार घ्यावा आणि प्रस्थापित माध्यमांसह डिजिटल व्यासपीठांचाही वापर करावा.' तेजा यांनी समाजमाध्यमांवरील परस्परविरोधी दाव्यांमुळे निर्माण होणाऱ्या संभ्रमाचा अनुभव सांगत पडताळलेल्या माहितीसाठी वर्तमानपत्रांकडे वळण्याचे महत्त्व अधोरेखित केले. डॉ. अभिजित नायर, स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्सचे अधिष्ठाता यांनीही वाचकांचा विश्वास संपादन करणे हे माध्यमांसमोरील महत्त्वाचे आव्हान असल्याचे सांगितले.

'रोजगाराभिमुख शिक्षण हवे'

विद्यार्थ्यांनी प्रत्यक्ष कार्यानुभवातून शिक्षण आणि रोजगाराभिमुख कौशल्ये देण्यावर भर देण्याची गरज आहे. बातमी सर्वप्रथम प्रसिद्ध करण्यापेक्षा तिची सत्यता पडताळणे आणि समाजासाठी उपयुक्त माहिती पोहोचवणे अधिक महत्त्वाचे आहे, असे डॉ. रविराजा सीताराम यांनी सांगितले.

EducationPost
NEWS | RESEARCH | VIEWS

INDUSTRY UPDATES

MIT-WPU Media Conference 2026 Highlights AI Challenges, Journalism Ethics and the Need for Accountability

The two-day Pune conference brought together journalists, editors, filmmakers and policy experts to discuss misinformation, algorithm-driven news, media credibility and responsible use of artificial intelligence.



The growing influence of artificial intelligence (AI) on journalism, the spread of misinformation and the need to strengthen public trust in news emerged as major talking points at the 8th National Conference on Media and Journalism organised by MIT World Peace University (MIT-WPU).

Held on October 30 and 31, 2026, in Pune, the conference was organised by the university's Department of Media and Communication under the theme Dialogue, Inclusivity & Peace. The event brought together senior journalists, media professionals, filmmakers, legal experts, policymakers, advertising specialists and students to examine the changing role of media in the digital age.

The discussions focused on the challenges posed by algorithm-driven news distribution, AI-generated content, deepfakes and declining audience attention spans. Speakers also emphasised that journalism must prioritise accuracy, editorial responsibility and public interest over the race to publish breaking news.

MIT-WPU Vice Chancellor stresses truth and responsible journalism

Addressing delegates at the inaugural session, MIT-WPU Vice Chancellor Prof. (Dr.) Raviraja N. Seetharam highlighted the university's focus on experiential learning and curriculum innovation to prepare students for professional challenges.

Referring to the importance of responsible communication, he drew attention to the Bhagavad Gita's message about speaking truthfully, pleasantly and without causing unnecessary distress.

He emphasised that the future of journalism depends not merely on publishing information quickly but on verifying facts, maintaining credibility and ensuring that news serves society.

Dr. Abhijit Nair, Dean of the School of Liberal Arts at MIT-WPU, also underlined the importance of earning audience trust through meaningful and thoughtful communication.

Four panel discussions examine changing media landscape

The conference also featured four panel discussions covering journalism, cinema, democracy, advertising and emerging technologies.

1. Journalism in Transition: Changing Media, Audiences and News

Moderated by Dr. Yogesh Joshi, Metro Editor at Hindustan Times, the discussion brought together Ravi Reddy, Vishal Khandelwal, Vishakha Nikam and Abhijit Atre.

BRAINFEED
HIGHER EDUCATIONplus

MIT-WPU's 8th National Conference on Media and Journalism Calls for Truth and Accountability in the Age of AI



Two-day conference on "Dialogue, Inclusivity & Peace" brings together editors, filmmakers, policy experts and students

The growing influence of algorithms on news consumption, the real-world dangers of misinformation, and the challenge of preserving public trust in the age of AI emerged as key concerns at MIT World Peace University's (MIT-WPU) 8th National Conference on Media and Journalism, held on October 30–31 in Pune. Organised by the Department of Media & Communication around the theme "Dialogue, Inclusivity & Peace," the two-day conference brought together senior editors, journalists, filmmakers, legal and policy experts, and advertising professionals to discuss the evolving responsibilities of media in a rapidly changing information landscape.

Welcoming the delegates at the inaugural session, the Vice Chancellor of MIT-WPU said the university is committed to experiential learning and curriculum innovation so that students are job-ready from day one. He added that the way journalists communicate matters, drawing on a verse from the Bhagavad Gita on speech that is truthful, pleasant and free of agitation.

"The responsibility now lies with the next generation to shape the future of media and journalism. Success isn't about publishing first—it is about validating truth, maintaining credibility, and delivering information that serves society meaningfully." Prof. Dr. Raviraja N. Seetharam, Vice Chancellor, MIT-WPU

Delivering the welcome address, Dr. Abhijit Nair, Dean of the School of Liberal Arts at MIT World Peace University, stressed the core focus of the conference, stating, 'The question before us today is no longer just how we reach people, but how we earn their trust through undivided, thoughtful attention.'"

The inaugural session, "The Attention Age: Media, Algorithms and the Battle for Trust," was led by Chief Guest Ramesh Menon, author, award-winning journalist, documentary filmmaker and educator. He said shrinking attention spans and the rise of algorithms have changed who decides what people read. "The editor has changed. Today, who is the editor? The editor is an algorithm. And the algorithm does not ask you, 'Is this true? Is this important?' It has only one thing: 'Will it hook the reader?'" he said.

Ravi Reddy, Resident Editor, The Hindu, Hyderabad, said verification matters more than speed in an age of AI-generated content and deepfakes, and that AI can assist newsrooms but cannot replace human judgement. "Algorithms measure engagement. Journalism measures public value' he said.

दैनिक दिव्य राष्ट्र

एआई युग में सत्य और जवाबदेही पर जोर, एमआईटी-डब्ल्यूपीयू, में राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन

दिव्य राष्ट्र ब्यूरो

पुणे। एमआईटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी (एमआईटी - डब्ल्यूपीयू,) में आयोजित 8वें राष्ट्रीय मीडिया एवं पत्रकारिता सम्मेलन में विशेषज्ञों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता फेक न्यूज, एल्गोरिदम आधारित सूचना प्रवाह और मीडिया की विश्वसनीयता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर गंभीर चर्चा की। दो दिवसीय सम्मेलन का विषय 'संवाद, समावेशिता और शांति' रहा। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में प्रो. डॉ. रविराजा एन. सीताराम, कुलपति, एमआईटी - डब्ल्यूपीयू, ने कहा कि पत्रकारिता की वास्तविक सफलता सबसे पहले खबर प्रकाशित करने में नहीं, बल्कि सत्यापन, विश्वसनीयता और समाजहित में निहित है। उन्होंने छात्रों को व्यावहारिक अनुभव आधारित शिक्षा प्रदान करने पर विश्वविद्यालय के विशेष जोर का उल्लेख किया। डॉ. अभिजीत नायर, डीन, स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स, ने कहा कि आज मीडिया के सामने सबसे बड़ी



चुनौती केवल लोगों तक पहुंचना नहीं, बल्कि उनका विश्वास अर्जित करना है। मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार एवं डॉक्यूमेंट्री निर्माता रमेश मेनन ने अटेंशन एज: मीडिया एल्गोरिथम एंड दा बैटलल फॉर ट्रस्ट विषय पर बोलते हुए कहा कि आज समाचारों की दिशा तय करने में एल्गोरिदम की भूमिका बढ़ गई है। उन्होंने चेतावनी दी कि एल्गोरिदम सत्य या महत्व की बजाय केवल दर्शकों की रुचि को प्राथमिकता देते हैं। सत्र को संबोधित करते हुए रवि रेड्डी, रेजिडेंट एडिटर, दा हिंदू ने कहा कि एआई आधारित सामग्री और डीपफेक के दौर में तेज़ी से अधिक महत्व सत्यापन का है। उन्होंने स्पष्ट किया कि एआई न्यूज़रूम की सहायता कर सकता है, लेकिन मानवीय निर्णय का विकल्प नहीं बन सकता। समापन सत्र में डॉ. मीना शर्मा, कंसल्टिंग एडिटर, न्यूज 24, ने मीडिया के समक्ष बढ़ते विश्वसनीयता संकट पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने मीडिया विद्यार्थियों से गुणवत्तापूर्ण और सार्थक कहानियों को मुख्यधारा तथा डिजिटल मंचों के माध्यम से लोगों तक पहुंचाने का आह्वान किया। सम्मेलन में आयोजित विभिन्न पैनल चर्चाओं में पत्रकारिता, फिल्म निर्माण, मीडिया नीति, लोकतंत्र, जनसंचार, विज्ञापन तथा जनसंपर्क के क्षेत्र में एआई के प्रभाव पर विचार-विमर्श किया गया। विशेषज्ञों ने निष्कर्ष निकाला कि वायरल संस्कृति की बजाय सत्यापन, नैतिकता और जनसेवा को पत्रकारिता का मूल आधार बनाए रखना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।